IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 5, Issue 3, December 2025

Impact Factor: 7.67

f'koefrl dh dgkfu;k e L=h çfrjk/k dk IkUn;

M,- Ihek ;kno

हिन्दी (NET&JRF)

'kk/k Ikjk'k

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक समाज है, जहाँ पुरुष की इच्छाएँ, महत्वाकांक्षाएँ ही सर्वोपरि मानी जाती हैं। लेकिन वर्तमान समय में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ स्त्रियों के चिन्तन, उनकी सोच में विकास हुआ है। स्त्रियों अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सजग हुई हैं। गौरतलब बात यह है कि स्त्रियों में यह सजगता केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रही, गाँवों में भी इसके स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलते हैं। यह सत्य है कि शहरी स्त्रियों में शिक्षा और आत्मनिर्भरता की अधिकता के कारण जिस परिमाण में सजगता आयी है, सीमित शिक्षा, आत्मनिर्भरता की कमी एवं सामाजिक जड़ता के कारण गाँवों की स्त्रियों में उस परिमाण में सजगता नहीं आ पायी है बावजूद इसके अपने सीमित शिक्षा और सीमित आत्मनिर्भरता में भी ग्रामीण स्त्रियाँ अपने अधिकारों और अपनी अस्मत की रक्षा के प्रति सजग हुई हैं। पुरुष की शोषण नीति और उनकी भोगवादी प्रवृति के प्रतिरोध में उठ खड़ी हुई हैं। शिवमूर्ति ने अपनी कहानियों में इसी सत्य से हमें परिचित कराया है। चाहे वह 'अकाल दंड' की सुरजी हो या 'कसाईबाड़ा' की शनीचरी हो या फिर 'तिरिया चरितर' की विमली। शिवमूर्ति के ये सभी स्त्री पात्र अपने ऊपर होनेवाले पुरुषों के जबरन अधिकार का पुरजोर विरोध करती हैं।

e[; 'kCn: स्त्री शोषण, स्त्री प्रतिरोध, आत्मनिर्भरता, परिभाषा,समाजिक जड़ता।